''चौपाल'' के प्रति कृषकों की समस्याएं

राहुल तिवारी
रुपसी रथ
एवं
रंजीत सिंह

प्रसार शिक्षा विभाग
भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर-243 122
बरेली (उ.प्र.)

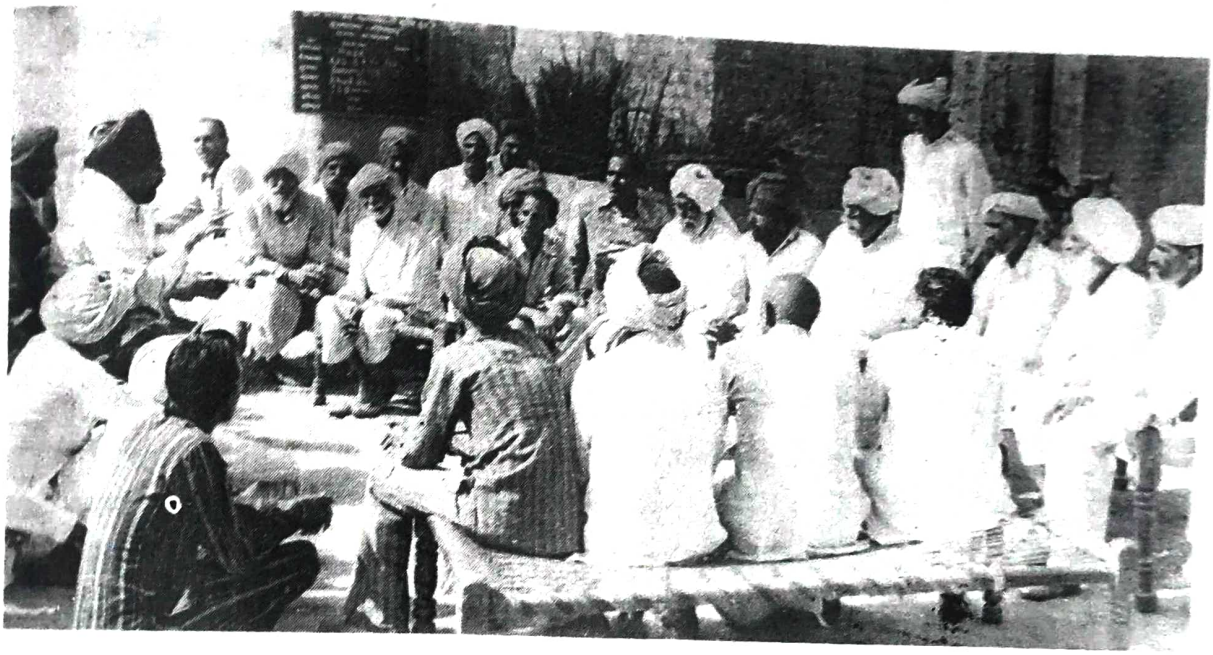

भारत में दूरदर्शन का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। स्वतन्त्रता के पश्चात् ही देश में विकास कार्यक्रमों की ओर आकर्षित किया जाने लगा था और उस समय विकास सम्बन्धी कार्यक्रमों को जनता के प्रति सर्वप्रिय बनाने और उन्हें अपनाने हेतु, प्राप्त सफलताओं का अवलोकन करना बहुत जरूरी माना जा रहा था। अत: इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिये सन् 1957 ई. में प. जवाहर लाल नेहरू के प्रधानमंत्रित्व काल में भारत में दूरदर्शन का उद्‌गम हुआ। सर्वप्रथम दूरदर्शन पर कुछ सीमित कार्यक्रमों को ही दर्शाया जाता था।

सन् 1967 ई. में भारत की कृषक जनता को ध्यान में रखते हुये एक कृषि प्रधान कार्यक्रम ''कृषि दर्शन'' को दूरदर्शन पर प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कृषि से सम्बन्धित नवीनतम पहलुओं को कृषकों तक पहुँचाना था। कृषि दर्शन कार्यक्रम की सफलताओं को देखते हुये इसमें कई सुधार किये जाते रहे। आज भारत के प्रत्येक प्रान्त में स्थित दूरदर्शन केन्द्रों के द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं और परिस्थितियों के अनुरूप कृषि एवं पशुपालन पर एक ग्रामीण कार्यक्रम प्रसारित किया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश दूरदर्शन केन्द्र में भी इस दिशा में एक ग्रामीण कार्यक्रम की आधारशिला रखी गई जिसका नाम ''चौपाल'' रखा गया। चौपाल

का प्रारंभ 2 अक्टूबर सन् 1993 ई. में इनसेट-2 बी के अन्तरिक्ष में प्रवेश करने के साथ ही किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य कृषि, पशुपालन, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा आदि पर समूह चर्चा एवं साक्षात्कार करना था जिससे इस प्रदेश की कृषक जनता को नये-नये पहलुओं से अवगत कराया जाये। चूंकि चौपाल एक नवीन कार्यक्रम था, अत: जरूरत हुई कि इस कार्यक्रम के प्रति दर्शकों की समस्याओं का अध्ययन किया जाये जिससे कि कार्यक्रम को और अधिक ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक बनाया जा सके।

अध्ययन की प्रक्रिया

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के बरेली जिले के बिथरीचैनपुर ब्लाक में किया गया। इस ब्लाक से दो गांवों मुडिया एवं रिठौरा को संस्थान के निकट होने के कारण चुना गया। इन ग्रामों से उन किसानों की सूची तैयार की गयी जिनके पास भूमि, पशु एवं दूरदर्शन उपलब्ध हो। इस सूची से यादृच्छिकता के आधार पर 55 ऐसे कृषकों का चुनाव किया गया जो चौपाल कार्यक्रम देखा करते थे। इन 55 चौपाल दर्शकों में से 22 दर्शक मुडया ग्राम से और 33 दर्शकों को रिठौरा ग्राम से चुना गया। इन चौपाल देखने वाले कृषकों से एक सारणी में साक्षात्कार के माध्यम से चौपाल देखने में आने वाली समस्याओं को पूछा गया।

परिणाम एवं चर्चा

अध्ययन के परिणामों से ज्ञात होता है कि अधिकांश चौपाल दर्शकों (30.91 प्रतिशत) की समस्या थी। चौपाल प्रसारण में बेहद तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया जाना। इसका मुख्य कारण था कि चौपाल में आमंत्रित विशेषज्ञों का उचित रूप से पूर्वाभ्यास न करना, जिससे वे अपने विचारों को सरल व शुद्ध हिन्दी में सहजता से नहीं कह पाते थे।

लगभग 18.18 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार चौपाल प्रसारण में आमंत्रित विशेषज्ञ चर्चा के दौरान अपनी भाषाशैली पर ध्यान नहीं देते थे। विशेषज्ञ चर्चा करते समय अपनी क्षेत्रीय भाषा को ही प्रयोग में लाते थे जिससे चौपाल दर्शक कार्यक्रम को पूर्णरूप से समझ नहीं पाते थे। अत: आवश्यकता इस बात की है कि चर्चा के लिये आमंत्रित विशेषज्ञों को यह सुझाव दिया जाये कि वे चर्चा करते समय उस भाषाशैली को प्रयोग में लाये जो कि उस ग्रामीण अंचल में

प्रयोग में लाई जाती हो और जिसे चौपाल दर्शक सहजता से समझ सकें।

उत्तरदाताओं में लगभग 16.36 प्रतिशत दर्शकों की समस्या थी कि दूरदर्शन केन्द्र चौपाल को साफ व सही ढंग से प्रसारित नहीं करते थे। अत: दूरदर्शन केन्द्रों को चाहिये कि चौपाल एवं ऐसे ही अन्य कार्यक्रमों को प्रसारित करते समय विशेष सावधानी रखें जिससे दर्शक इन ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक कार्यक्रमों को देखने में अपनी रुचि को बढ़ा सकें तथा इसमें दी जाने वाली जानकारी को अपने दैनिक कार्यकलापों में प्रयोग में ला सकें।

लगभग 14.55 प्रतिशत चौपाल दर्शकों का कहना था कि इस कार्यक्रम में दी जाने वाली अधिकतर जानकारी समय के अनुसार नहीं होती थी जिसके कारण कार्यक्रम देखने में उनकी रुचि कम थी। यदि यही जानकारी समयानुसार दिखाई जाये तो चौपाल अधिक रुचिकर एवं लाभदायक बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिये यदि रबी के मौसम में धान की खेती के बारे में जानकारी दी जाये तो वह व्यर्थ है परन्तु यदि इस मौसम में गेहूं की फसल या अन्य रबी की फसलों की चर्चा की जाये तो चौपाल दर्शक इस कार्यक्रम को देखने में अधिक रुचि लेंगे जिससे चौपाल कार्यक्रम कृषकों के मध्य अधिक लाभदायक व ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

उत्तरदाताओं में लगभग 10.91 प्रतिशत चौपाल दर्शक कार्यक्रम के समय विद्युत आपूर्ति न रहने से पेरशान थे। उनके विचार से चौपाल जैसे कृषि प्रधान कार्यक्रमों को प्रसारित करते समय प्रशासन को विशेषरूप से विद्युत आपूर्ति पर ध्यान देना चाहिये जिससे कृषक इस कार्यक्रम से पूरा लाभ उठा सकें।

कुछ उत्तरदाता (9.09 प्रतिशत) की समस्या थी कि दूरदर्शन केन्द्र उनके पूछे गये प्रश्नों को अपने प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में स्थान नहीं देते हैं जिससे उनकी रुचि चौपाल में कम होती जा रही थी। अत: केन्द्र को चाहिये कि वे प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में अधिक से अधिक पत्रों को सम्मिलित करें जिससे चौपाल के नियमित दर्शकों को प्रोत्साहन मिल सके।

निष्कर्ष

अध्ययन से प्राप्त परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश चौपाल दर्शक कार्यक्रम में दी गई जानकारी को अत्यधिक तकनीकी शब्दों के प्रयोग एवं क्लिष्ठ भाषा शैली के होने के कारण पूर्णरूप से समझ नहीं पाते थे। अत: दूरदर्शन अधिकारियों को चाहिये कि वे कृषि प्रधान कार्यक्रमों में अधिक तकनीकी शब्दों का प्रयोग न करें और कार्यक्रम का निर्माण सहज एवं सरल भाषा में करें ताकि उसके द्वारा दी गई जानकारियों का लाभ कृषकों को पूर्णरूप से मिल सके।

कुछ दर्शकों के अनुसार चौपाल कार्यक्रम के प्रसारण में कई तकनीकी खराबियां थी जिससे कार्यक्रम, दूरदर्शन पर साफ नहीं दिखाई देते थे। अधिकतर जानकारी समयानुसार नहीं थी जिससे कार्यक्रम के प्रति उनकी रुचि कम थी। प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में कृषकों के द्वारा पूछे गये प्रश्नों को बहुत कम सम्मलित किया जाता था। यदि दूरदर्शन अधिकारी कृषकों की इन सब समस्याओं को ध्यान में रखकर कार्यक्रम का निर्माण करें तो अवश्य ही यह कार्यक्रम भारत की कृषक जनता के लिये लाभकारी सिद्ध होंगे।